

पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि का संबंध" - एक अध्ययन

नरेंद्र पाल

(सहायक आचार्य)

आई०ए०एम०आर० बी० एड० कॉलेज

दुहाई, गाज़ियाबाद

➤ शोध सार :-

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है जो परिवार से प्रारंभ होती है जहां एक बालक अपने जीवन का महत्वपूर्ण भाग व्यतीत करता है अतः बालक की शिक्षा में परिवार का महत्वपूर्ण स्थान होता है पारिवारिक संस्था मूल रूप से प्रकार प्राकृतिक होती है माता बालक की सर्वोपरि शिक्षिका होती है यह बालक को अनौपचारिक शिक्षा अपने निर्देशन और परामर्श के द्वारा देती है। अतः परिवार बालक की प्रथम पाठशाला है। प्रस्तुत शोध पत्र में पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि का संबंध का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में उच्च एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक अनुसंधान के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन में जनसंख्या के रूप में गाजियाबाद जिले के ग्रामीण क्षेत्र में उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को लिया गया है।

न्यादर्श का चयन अकस्मिक एवं उद्देशपरक विधि द्वारा किया गया है तथा न्यादर्श के रूप में जनपद गाजियाबाद के मुरादनगर ब्लॉक के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा आठ के 400 विद्यार्थियों को लिया गया है। उपकरण के रूप में डॉक्टर कुमारी बीना शाह 1990 द्वारा निर्मित मानकीकृत पारिवारिक वातावरण मापनी एवं छात्र-छात्राओं के कक्षा आठ में अध्ययनरत गत-वर्ष परीक्षा के प्राप्तांको को शैक्षिक उपलब्धि के रूप में लिया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण के पश्चात निष्कर्ष में पाया गया कि जिन विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में माता-पिता का अतिशय योग होता है उनकी शैक्षिक उपलब्धि उच्च स्तर की होती है इसके विपरीत जिन विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में नियंत्रण, विचारों की स्वीकृति, त्याग की भावना एवं नियंत्रित पारिवारिक प्रतिकूल परिस्थितियां होती है ऐसे वातावरण में प्रत्येक बालक की शैक्षिक उपलब्धि निम्न स्तर की होती है। अर्थात् भिन्न-भिन्न पारिवारिक वातावरण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एक दूसरे से भिन्न होते हैं। अतः विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है।

➤ मुख्य शब्दावली :- पारिवारिक वातावरण, शैक्षिक उपलब्धि, सहानुभूति, सभ्यता एवं संस्कृति।

➤ प्रस्तावना :-

परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह होता है जो एक साथ रहते हैं और जिनमें रक्त संबंध होता है। पारिवारिक वातावरण के अंतर्गत घर का वातावरण आता है इसके अंतर्गत माता पिता के आपसी संबंध, माता पिता एवं बच्चों के बीच आपसी संबंध, पूरे परिवार के सदस्यों के बीच सौहार्दपूर्ण या तनावपूर्ण व्यवहार, आदि बहुत से कारक आते हैं। छात्रों की उपलब्धि उनके वातावरण से प्रभावित होती है बच्चों के समाजीकरण की प्रथम पाठशाला परिवार होती है। बालक जिस समाज और परिवार में रहता है, जिसके मानदंड, संबंध, परंपराएं मान्यताएं आदि अप्रत्यक्ष रूप से बालक के विकास को प्रभावित करती है। साधारणतया उच्च वर्गीय परिवार में बालकों की रुचियां विस्तृत होती है क्योंकि उनके पास संसाधन अधिक होने से विचारों एवं गतिविधियों को विस्तारित करने के अवसर अधिक उपलब्ध होते हैं जबकि गरीब परिवार को शिक्षा के प्रति अति सम्मान रखता है अपने बच्चों को अधिगम के अवसर देने के लिए त्याग भी कर सकता है उसके उनके बच्चों की रुचियां संकुचित होती हैं। परिवार की आर्थिक स्थिति भी उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है।

स्टोट (1929) ने कहा है कि “विद्यार्थी की गुणात्मक उपलब्धि पारिवारिक वातावरण पर निर्भर करती है। अच्छे पारिवारिक वातावरण से आने वाले छात्र अच्छी उपलब्धि प्राप्त करते हैं। जबकि बुरे वातावरण से आने वाले छात्रों की कक्षा में निष्कृष्ट उपलब्धि होती है”।

बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर किसी एक ही कारण का प्रभाव नहीं पड़ता अपितु उस पर अनेक कारणों का प्रभाव पड़ सकता है जैसे- परिवार में ही बालक का विकास प्रारंभ होता है,, समाज की बदलती हुई मान्यताएं परिवार को प्रभावित करती हैं। अतः बालक के पोषण पर उनका प्रभाव समस्या के रूप में होता है। औद्योगिक प्रगति ने पुराने संयुक्त परिवार की परंपरा को छिन्न-भिन्न कर दिया है जहां माता-पिता दोनों व्यवसाय में संलग्न है वहां पर बच्चों की स्थिति और भी खराब हो जाती है। परिवार में बिखराव बढ़ता जाता है इस स्थिति का प्रभाव बालक के मस्तिष्क पर पड़ना स्वाभाविक है। जिन घरों में माता-पिता का व्यवहार बालक के प्रति अच्छा नहीं होता वहां भी बालक असमायोजित हो जाता है। ऐसे परिवारों में बालकों की अवहेलना होती है तथा ऐसे परिवारों में बालकों का शैक्षिक स्तर निम्न स्तर का होता जाता है।

पेस्ट्रोलॉजी के अनुसार :- “परिवार- प्यार तथा स्नेह का केंद्र, शिक्षा का सर्वोत्तम स्थान तथा बालक का प्रथम स्कूल है”।

फ्रोबेल के अनुसार :- “माताएं बालक की आदर्श गुरु होती हैं तथा परिवार द्वारा प्राप्त हुई अनौपचारिक शिक्षा सबसे अधिक प्रभावशाली और प्राकृतिक होती है”।

परिभाषिक शब्दावली :-

- पारिवारिक वातावरण-परिवार बालकों की प्रथम पाठशाला होती है जहां उसका व्यक्तित्व आकार ग्रहण करता है। बालक की सभी रुचियां, आदतों, दृष्टिकोण एवं धारणाओं के विकास में पारिवारिक वातावरण

की महत्वपूर्ण भूमिका होती है पारिवारिक सदस्यों द्वारा प्रदत्त निर्देश, प्रेरणा, सहयोग, प्रोत्साहन आदि मिलकर पारिवारिक वातावरण बनाते हैं।

- शैक्षिक उपलब्धि-शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य जो किसी विशेष विषय अथवा पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में ज्ञान-समझ और कुशलताओं का मापन करता है और जिसकी सहायता से स्कूल में पढ़ाई जाने वाले विषयों और सिखाई जाने वाले कोशलों में विद्यार्थियों की सफलता अथवा उपलब्धि का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

➤ समस्या का प्रादुर्भाव एवं औचित्य :-

किसी भी राष्ट्र की संप्रभुता एवं प्रगतिशीलता उसके विचारशील नागरिकों पर निर्भर करती है। विचारशील नागरिक प्रजातांत्रिक राष्ट्रों की अनिवार्यता है क्योंकि प्रजातंत्र की सफलता बिना शिक्षा के संभव नहीं इसलिए प्रत्येक राष्ट्र अपने देश की जनसंख्या को शिक्षित करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहता है क्योंकि शिक्षित व्यक्ति ही तर्कपूर्ण चिंतन के आधार पर समस्याओं का समाधान खोजने में सक्षम होते हैं। पारिवारिक वातावरण सामाजिक आर्थिक स्तर, शैक्षिक अभिप्रेरणा का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर निसंदेह सकारात्मक प्रभाव पड़ता है अनेकों शिक्षा- शास्त्रियों एवं दार्शनिकों के अनुसार यह पाया गया कि विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि पर माता-पिता की शिक्षा, परिवार का आकार, और आर्थिक स्थिति का प्रभाव पड़ता है अतः शोधार्थी के मस्तिष्क में यह अंतर्द्वंद की स्थिति उत्पन्न हुई कि क्या वास्तव में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शोध पत्र में प्रयुक्त चरों के मध्य विभिन्नता पाई जाती है अथवा नहीं? अतः शोधार्थी के मस्तिष्क में कुछ स्वाभाविक जिज्ञासा एवं प्रश्न उत्पन्न हुए। जो शोध समस्या के चयन का कारण बने।

➤ समस्या का कथन :-

गाजियाबाद जिले के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन।

➤ शोध के उद्देश्य :- प्रस्तुत शोध अध्ययन में एक सामान्य उद्देश्य एवं कुछ विशिष्ट उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है जो निम्न है :

- **सामान्य उद्देश्य :-** उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
- **विशिष्ट उद्देश्य :-**
 - उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों के प्रति **पारिवारिक स्वतंत्रता या पारिवारिक नियंत्रण** का अध्ययन करना।

- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों के प्रति **ध्यान या उपेक्षा** का अध्ययन करना।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों के प्रति पारिवारिक **प्रधानता या आज्ञानुकूलता** का अध्ययन करना।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों के प्रति **स्वीकृति या अस्वीकृति** का अध्ययन करना।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च एवं शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों के प्रति **विश्वास या अविश्वास** का अध्ययन करना।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों के प्रति **उत्साह या उदासीनता** का अध्ययन करना।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों के प्रति **न्याय या पक्षपात** का अध्ययन करना।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च एवं शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के पारिवारिक बातों में विद्यार्थियों के प्रति **अपेक्षा या उपेक्षा** का अध्ययन करना।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों के प्रति **प्यार या त्याग** का अध्ययन करना।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों के प्रति **खुला संचार या नियंत्रित संचार** का अध्ययन करना।

➤ साहित्यावलोकन :-

शोधकर्ता ने कुछ साहित्य का अवलोकन किया जिनमें **डॉ रजनी सिंह** (2018) में पाया कि वातावरण के विभिन्न कारक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं। **देवेंद्र कुमार यादव** (2018) ने अपने अध्ययन में पाया कि अभिभावक आकांक्षा एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच सार्थक अंतर होता है। **स्वाति जायसवाल** (2018) ने पाया कि माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरुचि में धनात्मक सहसंबंध पाया गया। **रेखा यादव** (2017) ने पाया कि वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक संबंधों एवं विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्यों के बीच सकारात्मक संबंध प्राप्त हुआ। **अनिल कुमार, गुप्ता रेनु** (2016) ने पाया कि शिक्षित व अशिक्षित परिवार विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। **मधु गुप्ता एवं सुरेखा रानी** (2015) ने पाया कि घर वातावरण के कुछ आयामों का छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर सार्थक रूप से प्रभाव पड़ता है जबकि कुछ आयामों का शैक्षणिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। **डॉ सूची शर्मा** (2014) ने पाया की शैक्षिक उपलब्धि पर किशोरों के पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

➤ शोध समस्या का सीमांकन :-

- प्रस्तुत शोध अध्ययन को उत्तर प्रदेश के स्थित ब्लॉक मुरादनगर के ग्रामीण क्षेत्र तक सीमित किया गया है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन में कक्षा आठ के 400 विद्यार्थियों जिनमें 200 छात्र 200 छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल ग्रामीण क्षेत्र के बीच परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों को लिया गया है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन में पारिवारिक वातावरण को निर्धारित करने वाले कारकों में केवल स्वतंत्रता या नियंत्रण, ध्यान या उपेक्षा, प्रधानता या आज्ञानुकूलता, स्वीकृति या अस्वीकृति, विश्वास या अविश्वास, उत्साह या उदासीनता, अपेक्षा या उपेक्षा, प्यार या त्याग, न्याय या पक्षपात, खुला संचार या नियंत्रण संचार को शामिल किया गया है।

➤ परिकल्पनाएं :-

शोधकर्ता ने अपने शोध कार्य में एक मुख्य परिकल्पना एवं कुछ उपपरिकल्पनाओं का निर्माण किया है जो निम्नलिखित हैं :

मुख्य परिकल्पना : उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

उपपरिकल्पनाएं :

- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों के प्रति पारिवारिक स्वतंत्रता विरुद्ध नियंत्रण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों के प्रति पारिवारिक ध्यान विरुद्ध उपेक्षा विमा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों के प्रति पारिवारिक प्रधानता विरुद्ध आज्ञानुकूलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों के प्रति स्वीकृति विरुद्ध अस्वीकृति विमा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों के प्रति विश्वास विरुद्ध अविश्वास विमा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों के प्रति उत्साह विरुद्ध उदासीनता विमा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों के प्रति न्याय विरुद्ध पक्षपात विमा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों के प्रति अपेक्षा विरुद्ध उपेक्षा विमा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों के प्रति प्यार विरुद्ध त्याग विमा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में उच्च एवं शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों के प्रति खुला संचार विरुद्ध नियंत्रित संचार में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

➤ न्यादर्श चयन :-

शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध के न्यादर्श के चुनाव हेतु जिला गाजियाबाद के ग्रामीण क्षेत्र के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के कुल 4 ब्लॉक (रजापुर ब्लॉक, लानी ब्लॉक, मुरादनगर ब्लॉक, और भोजपुर ब्लॉक) में से मुरादनगर ब्लॉक के 20 परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में 400 विद्यार्थियों का चयन किया है।

➤ उपकरण :-

परीक्षण संबंधी विशेषताओं का ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने शोध के उद्देश की दृष्टि से मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया है। पारिवारिक वातावरण मापने हेतु- शोधकर्ता ने पारिवारिक वातावरण मापने हेतु डॉ० कुमारी बीना शाह (1990) द्वारा निर्मित मानकीकृत पारिवारिक वातावरण मापनी का प्रयोग किया है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि हेतु- विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि हेतु कक्षा आठ के विद्यार्थियों के गत वर्ष की वार्षिक सैद्धांतिक परीक्षा के प्राप्त अंकों का प्रतिशत किया है।

➤ उपकरण की विश्वसनीयता और वैधता :-

पारिवारिक वातावरण मापनी विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण को मापने का एक पूर्ण वैद्य साधन है। इस मापनी की विश्वसनीयता गुणांक का पता लगाने के लिए अन्वेषक में परीक्षा होने परीक्षा पुनः परीक्षा के तरीकों को अपनाया।

➤ शैक्षिक उपलब्धि :-

शैक्षिक उपलब्धि का पता लगाने के लिए परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा आठ के विद्यार्थियों के पूर्व परीक्षा के प्राप्ताको के प्रतिशत को सम्मिलित किया गया है। प्राप्ताको के प्रतिशत

वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि द्वारा परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों के रिकॉर्ड से अध्यापक द्वारा लिए गए हैं। शैक्षिक उपलब्धि के लिए उन्हीं विद्यार्थियों का चयन किया गया है जिन विद्यार्थियों के अध्ययन कार्य का अवलोकन शोधकर्ता द्वारा किया गया है।

परीक्षण का प्रशासन :-

परीक्षण के प्रशासन के लिए अनुसंधानकर्ता द्वारा निरीक्षण का कार्य गाजियाबाद जिले में स्थित मुरादनगर ब्लॉक के ग्रामीण क्षेत्र के 20 परिषदीय उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है। प्रश्नावली भरवाने के लिए शोधकर्ता चयनित विद्यालयों में स्वयं गया और प्रधानाचार्य की अनुमति लेकर परीक्षण मापनी भरवाई गई। वातावरण मापनी भरवाने से पूर्व विद्यार्थियों को मापनी के बारे में निर्देश दिए गए और उनसे कहा गया कि विद्यार्थी की समझ में जो प्रश्न में आए उसको वह शोधकर्ता से पूछ कर अपना निदान कर सकता है।

➤ विश्लेषण की प्रक्रिया :-

शोधकर्ता ने विश्लेषण की प्रक्रिया के लिए सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया है क्योंकि सांख्यिकी अनुसंधान का आवश्यक अंग होता है। प्रस्तुत अध्ययन कार्य करने के लिए निम्नलिखित सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है:

- **मध्यमान :-** किसी भी अंग सामग्री के समस्त अंगों के योगफल को उन अंकों की संख्या से भाग देने के लिए जो भागफल आता है वही मध्यमान होता है।
- **मानक विचलन :-** दिए गए प्राप्तांकों के मध्यमान से प्राप्त अंकों के विचलनओ के वर्गों के मध्यमान का वर्गमूल द्वारा प्राप्त मान ही मानक विचलन होता है।
- **क्रांतिक अनुपात :-** दो बड़े समूहों के मध्यमानों के अंतरों की सार्थकता को ज्ञात करने के लिए क्रांतिक अनुपात का उपयोग किया गया है।

➤ शोध परिणाम :-

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण की सभी विमाओ के प्रभाव का अध्ययन जानने के लिए माध्य, मानक विचलन और क्रांतिक अनुपात की गणना की गई। इससे यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि पारिवारिक वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण और शैक्षिक उपलब्धि के संबंध का एक अध्ययन किया गया। जिसके निम्न परिणाम प्राप्त हुए :

- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों के प्रति पारिवारिक स्वतंत्रता विरुद्ध नियंत्रण विमा में सार्थक अंतर है। जिसमें

छात्रों का क्रांतिक अनुपात मान 19.33 छात्राओं का क्रांतिक अनुपात मान 15.32 पाया गया। जो 0.01 और 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों के प्रति ध्यान विरुद्ध उपेक्षा विमा में सार्थक अंतर है जिसमें छात्रों का क्रांतिक अनुपात 27.9 और छात्राओं का क्रांतिक अनुपात 21.0 पाया गया। जोकि 0.01 और 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों के प्रति पारिवारिक प्रधानता विरुद्ध अज्ञानुकूलता विमा में सार्थक अंतर है जिसमें छात्रों का क्रांतिक अनुपात 21.47 और छात्राओं का क्रांतिक अनुपात 22.41 प्राप्त हुआ जो 0.01 और 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों के प्रति स्वीकृति विरुद्ध अस्वीकृति विमा में सार्थक अंतर है जिनमें छात्रों का क्रांतिक अनुपात 22.36 और छात्राओं का क्रांतिक अनुपात 20.51 पाया गया जो कि 0.01 और 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों के प्रति विश्वास विरुद्ध अविश्वास विमा में सार्थक अंतर है। जिनमें छात्रों का क्रांतिक अनुपात 23.39 और छात्राओं का क्रांतिक अनुपात 20.25 पाया गया जोकि 0.01 और 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों के प्रति उत्साह विरुद्ध उदासीनता विमा में सार्थक अंतर है जिनमें छात्रों का क्रांतिक अनुपात 24.37 और छात्राओं का क्रांतिक अनुपात 14.70 पाया गया जोकि 0.01 और 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों के प्रति अपेक्षा विरुद्ध उपेक्षा विमा में सार्थक अंतर है। जिनमें छात्रों का क्रांतिक अनुपात 24.11 और छात्राओं का क्रांतिक अनुपात 21.37 पाया गया जोकि 0.01 और 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों के प्रति प्यार विरुद्ध त्याग विमा में सार्थक अंतर है। जिनमें छात्रों का क्रांतिक अनुपात 26.97 और छात्राओं का क्रांतिक अनुपात 20.88 प्राप्त हुआ जोकि 0.01 और 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों के प्रति न्याय विरुद्ध पक्षपात विमा में सार्थक अंतर है। जिन में छात्रों का क्रांतिक अनुपात 22.81 और छात्राओं का क्रांतिक अनुपात 14.94 प्राप्त हुआ। जोकि 0.01 और 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों के प्रति खुला संचार विरुद्ध नियंत्रित संचार विमा में सार्थक अंतर है। जिनमें छात्रों का क्रांतिक अनुपात 26.8 और छात्राओं का क्रांतिक अनुपात 14.84 प्राप्त हुआ जोकि 0.01 और 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

➤ शोध निष्कर्ष :-

पारिवारिक वातावरण मापनी के विभिन्न आयामों जैसे- स्वतंत्रता विरुद्ध नियंत्रण, ध्यान विरुद्ध उपेक्षा, प्रधानता विरुद्ध अज्ञानकूलता, स्वीकृति विरुद्ध अस्वीकृति, विश्वास विरुद्ध अविश्वास, उत्साह विरुद्ध उदासीनता, अपेक्षा विरुद्ध उपेक्षा, प्यार विरुद्ध त्याग, न्याय विरुद्ध पक्षपात, एवं खुला संचार विरुद्ध नियंत्रित संचार में क्रांतिक अनुपात का मान 0.05 और 0.01 सार्थकता स्तर के मान से ज्यादा प्राप्त हुआ है। अतः यह सभी विमाएं 0.01 और 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक हैं अतः यहां सभी विमानों की शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती हैं। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि ये सभी विमाएं शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती हैं। शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने प्रदर्शित किया कि पारिवारिक स्वतंत्रता, माता पिता का बच्चे पर ध्यान, पारिवारिक प्रधानता, पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों की अपनी रुचि एवं योग्यता के अनुसार स्वीकृति मिलना, माता-पिता का बच्चे पर विश्वास होना, माता-पिता का बच्चे के प्रति न्याय की भावना रखना, परिवार में बालकों की शैक्षिक गतिविधियों के प्रति काफी अपेक्षा रखना, माता-पिता का अपने बच्चों की शैक्षिक गतिविधियों के प्रति उत्साहित होना, परिवार में माता-पिता का बालक के प्रति लगाव एवं माता-पिता द्वारा अपने ज्ञान एवं अनुभव को बालक के साथ आदान प्रदान करना बालक की उच्च शैक्षिक उपलब्धि की ओर प्रेरित करता है। इसके विपरीत जिन परिवारों में माता-पिता का बालक के प्रति अविश्वास, नियंत्रण, उपेक्षा, पक्षपात की भावना, अस्वीकृति, उदासीनता, त्याग एवं नियंत्रित संचार होता है ऐसे बालकों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न स्तर की हो जाती है।

➤ विद्यार्थियों के लिए निहितार्थ :-

विद्यार्थियों को अपनी शैक्षिक उपलब्धि को उच्च करने के लिए स्वयं का मूल्यांकन करना चाहिए। इसलिए विद्यार्थियों की दृष्टि से निम्न शैक्षिक निहितार्थ स्पष्ट किए जा सकते हैं :

- विद्यार्थी स्वयं की क्षमताओं को पहचान कर शैक्षिक उपलब्धि के लिए दृढ़ संकल्प कर सकेंगे।
- निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थी प्रयास करके उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त कर सकेंगे।

- विद्यार्थी समय समय पर विद्यालय में आयोजित पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेकर सहभागिता व उत्तरदायित्व के गुणों को विकसित कर सकेंगे।
- विद्यार्थी सजग होकर शिक्षकों के द्वारा प्रेषित ज्ञान का सदुपयोग कर सकेंगे।
- एक ही कक्षा के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं पारिवारिक वातावरण में भिन्नता होती है। विद्यार्थी शोध परिणामों द्वारा अपनी योग्यता का वास्तविक मूल्यांकन कर लक्ष्य तक पहुंचने के लिए अनवरत कार्य कर सकेंगे।

शिक्षकों के लिए निहितार्थ :-

शिक्षक का अपने विद्यार्थियों पर गहरा प्रभाव पड़ता है इसलिए शिक्षक के लिए प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित शिक्षक निहितार्थ हो सकते हैं :

- शिक्षक अपने व्यवहार के द्वारा विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में वृद्धि एवं विद्यार्थियों को उनकी क्षमताओं से परिचित करा सकेंगे।
- शिक्षक मनोविज्ञान का अध्ययन करके विद्यार्थियों की समस्या को समझ सकेंगे और उसका निवारण कर सकेंगे।
- शिक्षक विद्यार्थियों की उन्नति के लिए उन्हें जागरूक कर सकेंगे।
- विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को उच्च करने के लिए शिक्षक अभिभावकों से संपर्क कर सकेंगे।
- अध्यापक छात्रों के अभिभावकों से मिलकर उन्हें बच्चों के सकारात्मक पारिवारिक वातावरण प्रदान करने के लिए प्रेरित कर सकेंगे।

➤ सन्दर्भ सूची :-

- शर्मा, डॉ० ज्योति. (2019) अधिगमकर्ता के रूप में विकास. मेरठ: प्रकाशक- विनय रखेजा c/o आर लाल बुक डिपो।
- गुप्ता, डॉ० एस पी एवं गुप्ता, डॉ० अलका. (2014) शिक्षा मनोविज्ञान. इलाहाबाद: राजषि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय।
- शर्मा, आर ए. (2014) शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया. मेरठ: आर लाल बुक डिपो।
- सिंह, अरुण कुमार. (2013) शिक्षा मनोविज्ञान. पटना: प्रोफेसर स्नातकोत्तर विभाग. पटना विश्वविद्यालय।
- श्रीवास, संदीप कुमार एवं कुमार, डॉ० अरुण. (2013) शिक्षा मनोविज्ञान. लखनऊ: एसोसिएट प्रोफेसर शिक्षा विभाग. लखनऊ विश्वविद्यालय।
- सिंह, डॉ० गया. (2012) अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया. मेरठ: प्रकाशक- विनय रखेजा c/o आर लाल बुक डिपो।
- भटनागर, ए बी, भटनागर, मीनाक्षी एवं भटनागर, अनुराग. (2012) एजुकेशनल साइकोलॉजी. मेरठ: आर लाल बुक डिपो।
- मंगल, एस के एवं पाठक, पी डी. (2012) अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया. अग्रवाल पब्लिकेशन।
- जोशी, डॉ० मनीषा एवं शर्मा, डॉ० राकेश कुमार. (2012) शिक्षा मनोविज्ञान. मेरठ: अग्रवाल पब्लिकेशन।
- लाल, रमन बिहारी एवं जोशी, सुरेश चंद्र. (2012) शिक्षा मनोविज्ञान. मेरठ: प्रकाशक- विनय रखेजा c/o आर लाल बुक डिपो।
- मंगल, एस के. (2014) व्यवहारिक विज्ञान में अनुसंधान विधियां. दिल्ली: पी एच आई प्रा० लि०।